Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 2, March-2022, ISSN 2230-7540

विषय चयन में परामर्श की आवश्यकता

दीप कँवर[1]* डॉ. किरण माहेश्वरी[2]

[1] शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, एपेक्स यूनीवर्सिटी, जयपुर, (राजस्थान)

[2] एसोसिएट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, एपेक्स यूनीवर्सिटी, जयपुर (राजस्थान)

सार - वर्तमान में निरन्तर शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन हो रहे है और शिक्षा में विभिन्न विषयों का समावेश भी उसी में से एक है। शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा 10 के उपरान्त विषय चयन एक महत्वपूर्ण एवं गंभीर निर्णय होता है। विषय का सही चयन न होने पर विद्यार्थी में भटकाव व अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। विषय चयन में शैक्षिक परामर्शदाता की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है यदि उचित समय पर विद्यार्थी की बुद्धि अभिरूचि , दक्षता, क्षमता का मूल्यांकन मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से करके विद्यार्थी की जिस क्षेत्र में रूचि है उसी आधार पर विषय का चयन हो तो विद्यार्थी के लिए अधिगम प्रक्रिया सरल हो जाती है।

---------------------------------X---------------------------------

प्रस्तावना

प्रतिस्पर्धा के इस युग में अपनी राहे तय करना आसान नहीं है। बदलते परिवेश में पुराने पारम्परिक विषयों और पाठ्यक्रमों की तुलना में नये-नये विषय और पाठ्यक्रम अधिक प्रासंगिक हो गए है। बीते कुछ ही वर्षों में शिक्षा के कई नये क्षेत्रों का बड़ी संख्या में उदय हुआ है , जिन्हें देखकर विद्यार्थी का भ्रमित होना स्वाभाविक है। अच्छे शैक्षिक भविष्य के लिए सही विषय का चुनाव होना सबसे जरूरी कारक है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कक्षा दसवीं उत्तीर्ण होने के पश्चात् प्रत्येक विद्यार्थी को 11 वीं कक्षा में प्रवेश के समय अपनी आगे की शिक्षा के लिए एक विषय का चयन करना होता है। विद्यार्थी के इस चयन का प्रभाव उसके पूरे जीवन पर रहता है। उसके द्वारा जिस विषय का चयन किया जाएगा उसी के अनुरूप उसके भविष्य एवं उसके रोजगार की संभावनाएँ निर्भर करती है। विद्यार्थी के जीवन में कक्षा 11 व 12 की पढ़ाई का सर्वाधिक महत्व इसलिए भी है, कि अधिकांश प्रतिस्पर्धाओं और परीक्षाओं में इन कक्षाओं के पाठ्यक्रम का समावेश रहता है। वर्तमान समय में अतिप्रतिस्पर्धा के दबाव और बेरोजगारी के चलते उपयुक्त विषय का चयन कर पाना और भी कठिन हो गया है। इसके अलावा रोजगारमूलकता के नाम पर नए-नए पाठ्यक्रमों के आने से विद्यार्थी का भ्रमित होना भी स्वाभाविक है। इसलिए विद्यार्थी के विषय चयन को लेकर हमें बहुत गंभीर रहना चाहिए।सही विषय का चयन विद्यालय स्तर पर ही करके भटकाव की स्थिति को बदला जा सकता है। उचित व सही मार्गदर्शन के अभाव में आज का युवक बेरोजगारी , भूखमरी, गरीबी आदि समस्याओं में उलझा रहता है। विद्यार्थियों को ना तो अपनी योग्यता का पता होता है ना ही अपनी रूचियों एवं आकांक्षाओं का, इसी असमंजस व उचित मार्गदर्शन के अभाव में गलत विषय का चयन कर लेते है। माध्यमिक स्तर पर लिये गये उचित निर्णय विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। एक कुशल व अनुभवी परामर्शक द्वारा दिया गया परामर्श विद्यार्थियों को उचित निर्णय लेने में सहायता कर सकता है। आज देश में ग्रामीण व शहरी स्तर पर अनेक विद्यालय खुल गये है। प्राथमिक से लेकर उच्च अध्ययन की सभी प्रकार की सुविधाएँ सहज उपलब्ध है , किन्तु विद्यार्थी 10वीं उत्तीर्ण करने के बाद उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सही पाठ्यक्रम के चयन व सही परामर्श के अभाव में अपने आपको किंकत्र्तव्यविमूढ़ सा महसूस करता है। विद्यार्थी भटकाव की स्थिति में अभिभावक , शिक्षक से सही परामर्श की उम्मीद करता है , जो उसे सही दिशा प्रदान कर सके। विद्यार्थी को विद्यालय स्तर पर ही विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विषय चयन से सम्बन्धित अनेक जानकारियाँ प्रदान की जानी चाहिए जिससे की वह विषयों की विस्तृत श्रंखला से अनभिज्ञ न रहें।

www.ignited.in

विषय चयन में परामर्श

परामर्श वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थियों को विषयों को चुनने, शिक्षा में सफलता प्राप्त करने और शिक्षा प्राप्त करते समय उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान किया जाता है। विषय के चयन के लिए शैक्षिक परामर्श की प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के द्वारा छात्र को विषय चयन के लिए परामर्श प्रदान किया जाता है। इस हेतु मनोवैज्ञानिक परीक्षण जैसे विद्यार्थी के लिए रूचि परीक्षण , बुद्धि परीक्षण, अभिक्षमता परीक्षण आदि का उपयोग कर विद्यार्थी की रूचि , योग्यता व क्षमता का आंकलन किया जाता है। परीक्षण के आधार पर आंकलन कर विद्यार्थी की जिस क्षेत्र में रूचि होती है , उसकी क्षमता, योग्यता के आधार पर उपयुक्त विषय चयन हेतु उसे परामर्श प्रदान किया जाता है।

विषय चयन में परामर्शदाता की भूमिका

प्राचीनकाल में जब मानव जीवन सरल था और समाज मे कोई जटिलता नहीं थी तब परामर्श की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि तब विषय चयन हेतु बहुत से विकल्प नहीं थे, सीमित विषयों में से अभिभावक , शिक्षक आदि के मागदर्शन द्वारा ही विषय का चुनाव कर लेते थे। परन्तु अब यह इतना सरल नहीं है , अब विषयों के चयन में जटिलता आ गयी है व विद्यार्थी के समक्ष अनेक उपविषय उपलब्ध होते है , समाज में विज्ञान युग के कारण क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे है। इन परिवर्तनों की मांग के स्वरूप ही कुशल व प्रशिक्षित युवकों की मांग बढ़ रही है। इसी मांग की पूर्ति के लिए सही समय पर सही विषय का चुनाव कर विद्यार्थी अपना भविष्य संवार सकते है। अतः विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी, समस्याओं के समाधान हेतु हमें विशेष प्रकार की सहायता या परामर्श की आवश्यकता होती है जो विशेषज्ञ ही दे सकता है। अनेक विधार्थी अपने अध्ययनकाल में इस समस्या का सामना करते है , सही दिशा निर्देशन की अनुपस्थिति में भटकाव की स्थिति भी उत्पन्न होती है। इस समस्या समाधान हेतु समय व धन की बर्बादी के बचाव हेतु यह आवष्यक है कि सही समय पर सही निर्णय लेने हेतु विद्यालय स्तर पर हर विद्यालय में एक परामर्शदाता होना चाहिए जो परामर्श प्रदान कर सके। विषय चयन हेतु मार्गदर्शक बन सके, बालक व बालिका की योग्यता के अनुसार विषय चयन में सहयोग करें।सही या गलत के निर्णय के समर्थन या सलाह के लिए परामर्श प्रदान करें। विद्यार्थी या अभिभावक द्वारा लिया गया गलत निर्णय विद्यार्थी के मन में असमंजस की स्थिति उत्पन्न करता है। विद्यार्थी विषय चयन कर उसमें अरूचि दिखाता है जिससे बालक की प्रगति रूक जाती है। साथ ही अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण के लिए आयुषी एक कलात्मक प्रवृति की विद्यार्थी है और चित्रकारी बहुत अच्छी करती है। वह अत्याधिक रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रवृति की बालिका है वह ऐसे क्षेत्र में बेहतर प्रदर्षन कर सकती है जिसमें रचनात्मक और कलात्मक क्रियाकलाप सम्मिलित हो परन्तु उसके अभिभावकों ने उसे विज्ञान विषय का चयन करा दिया जिसका परिणाम यह निकला कि कक्षा 12 के परीक्षा परिणाम में उसे असफलता मिली वह अपना आत्मविष्वास खोकर हीन भावना से ग्रस्त हो गई। गलत विषय के चयन से षिक्षा में तो अवरोध उत्पन्न हुआ है साथ ही समय व धन की भी बर्बादी हुई। यह स्थिति उत्पन्न नहीं होती यदि कक्षा 11 में प्रवेश के समय ही षिक्षक अभिभावक चर्चा द्वारा विषय चयन हेतु उसे परामर्ष प्रदान किया जाता। वह मार्गदर्षन एवं परामर्ष से लाभान्वित होती तो सही विषय का समय पर चुनाव कर सफलता प्राप्त करती। ऐसे अनेकों उदाहरण हमारे सामने आते है जहाँ गलत विषय के चयन से शिक्षा में अवरोध एवं भटकाव की स्थिति उत्पन्न होती है। इन समस्याओं से बचने के लिए शिक्षा में शैक्षिक परामर्षदाता की भूमिका का महत्वपूर्ण स्थान है।

विषय चयन में परामर्ष की आवश्यकता

परामर्श विद्यार्थी को स्वयं की योग्यताओं रूचियों एवं अवसरों आदि को समझाकर स्वयं को और भली प्रकार से समझने में सहायता करना। यह विद्यार्थी को उसकी रूचि के विभिन्न विषयों की जानकारी प्रदान करता है। साथ ही विद्यार्थी की शैक्षिक एवं व्यावसायिक चयन की योजना निर्माण में सहायता करना है। विद्यार्थी की विशिष्ट योग्यताओं एवं सही दृष्टिकोण को प्रोत्साहित तथा विकसित करता है।

सरकार की नीतियाँ एवं परामर्श

सरकार द्वारा समय समय पर विभिन्न नितियों व आयोगों द्वारा निर्देशन एवं परामर्ष कार्यक्रम के बारे में अनेक सुझाव दिये गये है। क्योंकि शैक्षिक निर्देशन की आवष्यकता शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर होती है। इसलिए शिक्षा को प्रभावी एवं दक्षतापूर्ण बनाने के लिए प्रत्येक स्तर पर विद्यालय के निर्देशन एवं परामर्ष सेवा को आवश्यक बनाया जाना चाहिए। निर्देशन एवं परामर्श के

क्षेत्र में भारत विकसित देशों की तुलना में काफी पीछे है। इस स्थिति को देखते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग के द्वारा 1952-53 में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी प्रस्तुत किए। इन सुझावों मे माध्यमिक स्तर पर निर्देशन एवं परामर्श की उचित व्यवस्थाओं पर बल दिया गया। निर्देशन एवं परामर्श समतियों का संगठन किया जाए , प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में परामर्शदाता नियुक्त किया जाए। शिक्षकों को निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम से अवगत करा उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। इसी तरह कोठारी शिक्षा आयोग ने भी 1964 में निर्देशन एवं परामर्श हेतु व्यापक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। बालक के सम्पूर्ण विकास के लिए कोठारी आयोग ने निर्देशन एवं परामर्श को सहायक बताया। कोठारी आयोग के अनुसार परामर्श व निर्देशन का आरंभ प्राथमिक स्तर पर ही जाना चाहिए। जिला स्तर पर निर्देशन एवं परामर्श ब्यूरो की स्थापना की जाय। कोठारी आयोग ने बताया कि निर्देशन का क्षेत्र व्यापक है , वह समायोजन तक ही अपने को सीमित नहीं रखता , अपितु बालक के विकास में भी सहायता करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 द्वारा निर्देशन एवं परामर्श को शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग माना है। तथा कहा कि सरकार आवष्यक संसाधनों व योग्य प्रशिक्षित परामर्श को उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ साथ छात्र-अभिभावक-अध्यापक त्रिगुट को इस कार्यक्रम की सफलता में सहायता प्रदान करें। इसी तरह राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान द्वारा विद्यालयों में निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम सम्बन्धित गतिविधियों के आयोजन का उल्लेख किया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के अनुसार शिक्षक आवश्यक परामर्श कौशल विकसित करे एवं बच्चों की शैक्षिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान करें। समग्र शिक्षा योजना के अनुसार विद्यालय सहायक संरचना के रूप में परामर्श की सुविधा प्रदान करेंगे एवं हस्तक्षेपों के माध्यम से शिक्षक शिक्षा के एकीकरण द्वारा विद्यालय शिक्षा एवं परामर्श के बीच प्रभावी अभिसरण और सम्बन्धों की सुविधा प्रदान करेंगें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बच्चों के अधिगम सुधार के लिए शिक्षकों को शिक्षण में मार्गदर्षन और मदद उपलब्ध करना तथा व्यवसाय सम्बन्धी मार्गदर्षन देना आदि का उल्लेख किया गया है। केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड ने युनिसेफ के साथ पार्टनरशिप कर सभी सम्बन्ध विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के मार्गदर्शन व परामर्श के लिए ऑनलाइन पोर्टल शुरू किया है।

परामर्श कार्यक्रम एवं समस्याएँ

- सरकार के इतने प्रयासों के पश्चात् भी अभी तक भारत में परामर्ष सेवाओं का अभाव है। इसका मुख्य कारण परामर्श कार्यक्रमों के प्रति जानकारी का अभाव, अप्रशिक्षित परामर्शदाता, विद्यालयों में पाठ्यक्रम का अभाव , अशिक्षित अभिभावक आदि अनेक ऐसे कारण है जो इस कार्यक्रम की सफलता में आड़े आ रहे है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में परामर्श सेवाएं प्रदान करने के लिए शैक्षिक परामर्शदाता उपलब्ध नहीं है और सेवाएं प्रदान भी की जा रही हैं तो वह उच्च निजी विद्यालयों में प्रदान की जा रही है जहाँ पर गरीब विद्यार्थी अध्ययन नहीं कर सकते और वे इस लाभ से वंचित रह जाते है। इसके अतिरिक्त एक मुख्य कारण प्रमापीकृत परीक्षणों का अभाव , परामर्ष कार्यों हेतु सर्वाधिक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण सामग्री परीक्षण ही है हमारे देश में योग्यता, अभिरूचियों बुद्धि आदि के लिए प्रमापीकृत परीक्षण उपलब्ध नहीं है। इस क्षेत्र में शोध कार्य भी अभी कम हुए है। यदि परामर्श कार्यक्रम के प्रति विद्यालय शिक्षक , अभिभावक व विद्यार्थी सभी सजग रहेंगे तो अवश्य ही इस कार्यक्रम को सफलता मिलेगी।

परामर्श की सफलता हेतु सुझाव

- प्रामर्श की आवश्यकता व महत्व की गहनता से प्रशासन को अनुभव करना चाहिए और परामर्श हेतु आवश्यक सुविधाएँ एवं साधन उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान करनी चाहिए।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को परामर्श अभिमुख बनाया जाना चाहिए।
- परामर्श के क्षेत्र में विभिन्न शोधों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- विद्यालय में समय समय पर परामर्श हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए एवं परामर्शदाताओं को विद्यालय में आमंत्रित करना चाहिए।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है किपरामर्श के माध्यम से हम विद्यार्थी की योग्यता , क्षमता व रूचि के अनुसार उपयुक्त विषय चयन में सहयोग कर सकते है। वर्तमान प्रतियोगिता के युग में विद्यार्थी आगे बढ़ने के लिए अभिभावकों के दबाव मित्रमण्डली आदि अनेक

www.ignited.in

कारणों से विषय चयन तो कर लेते हैं लेकिन तनाव व अवसाद की स्थिति मे आ जाते है। इस स्थिति से बचाव में परामर्शदाता उनका सहायक होगा, वह सही विषय का चयन करा विद्यार्थी का मार्ग प्रशस्त करेगा।शिक्षा में व्यवधान के कारण विद्यार्थी में असंतोष व कुंठा की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिससे वह अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है व अनुशासनहीन बन जाता है। इसका एक कारण गलत विषय का चयन हो सकता है। अतः उचित समय पर दिया गया विषय परामर्श उसे इन सभी स्थितियों से बचाता है।उचित विषय चयन से विद्यार्थी का शैक्षिक विकास होता है और आगे का मार्ग प्रशस्त हो‌ेता है। गलत विषय के चयन से विद्यार्थी असफल हो जाता है जिससे अपव्यय होता है व विद्यार्थी की प्रगति रूक जाती है। परामर्ष इस अपव्यय व अवरोध को रोकने में सहायक होगा।
परामर्श एवं निर्देशन सेवाओं का योग एवं कार्य विद्यार्थियों को शैक्षिक मार्गदर्शन प्रदान करने से है , इसका लक्ष्य समायोजन एवं विकास दोनों में सहायता पहुंचाना है। इसके द्वारा विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है साथ ही यह विद्यार्थी को विद्यालय एवं घर की परिस्थितियों में सर्वा‌ेत्तम संभावित समायोजन में भी सहायता पहुंचाता है। इसलिए परामर्श व निर्देशन सेवा को शिक्षा का संघटक माना जाना चाहिए, यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थियों को सहायता प्राप्त होती रहती है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा समाप्त कर लेने के पश्चात् विद्यार्थियों और अभिभावकों को भावी शिक्षा के लिए विषय चयन में इसके द्वारा सहायता उपलब्ध कराई जा सकती है जो कि मात्र परीक्षा परिणामों पर आधारित न होकर विद्यार्थी की संभावनाओं एवं रूचियों पर आधारित होगी।

सन्दर्भ

1 भटनागर, आर.पी. (2001): गाइडेन्स एण्ड काउंसलिंग इन एजुकेषन एण्ड साइकोला‌ॅजी, मेरठ, आर. लाल. बुक डिपो.

2 सिंह, रामपाल (2009): शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देषन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर.

3 डॉ. कुमार कौषलेन्द्र एवं संजीव कुमार शुक्ला (2016): समकालीन भारतीय षिक्षा , आगरा, राखी प्रकाषन.

4 ड‌ॉ. सिंह एच.पी. अन्य (2016): समसामयिक भारत और षिक्षा, जयपुर, राधा प्रकाषन मन्दिर.

5 उपाध्याय, राधावल्लभ (2018): शैक्षिक निर्देषन एवं परामर्ष, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेषन.

6 डॉ. शर्मा पी.डी. (2020): भारत में षिक्षा स्तर , समस्याएँ एवं मुद्दे , आगरा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर-

Corresponding Author

दीप कँवर*

शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, एपेक्स यूनीवर्सिटी, जयपुर, (राजस्थान)